इकाई –1

मधुमक्खी किसके लिए मधु संचित करती है?

लोककथा

शाहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

शाहंशाह अकबर गंभीर चर्चा में मग्न विद्वानों के एक समूह को देख रहे थे। वे बीरबल की ओर मुड़कर बोले, "बीरबल, मैं बहुत चतुर नहीं हूँ। बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता। मैं हर चीज़ को सीखना चाहता हूँ। कल से मेरी पढ़ाई शुरू हो, इसका इंतज़ाम करो।"

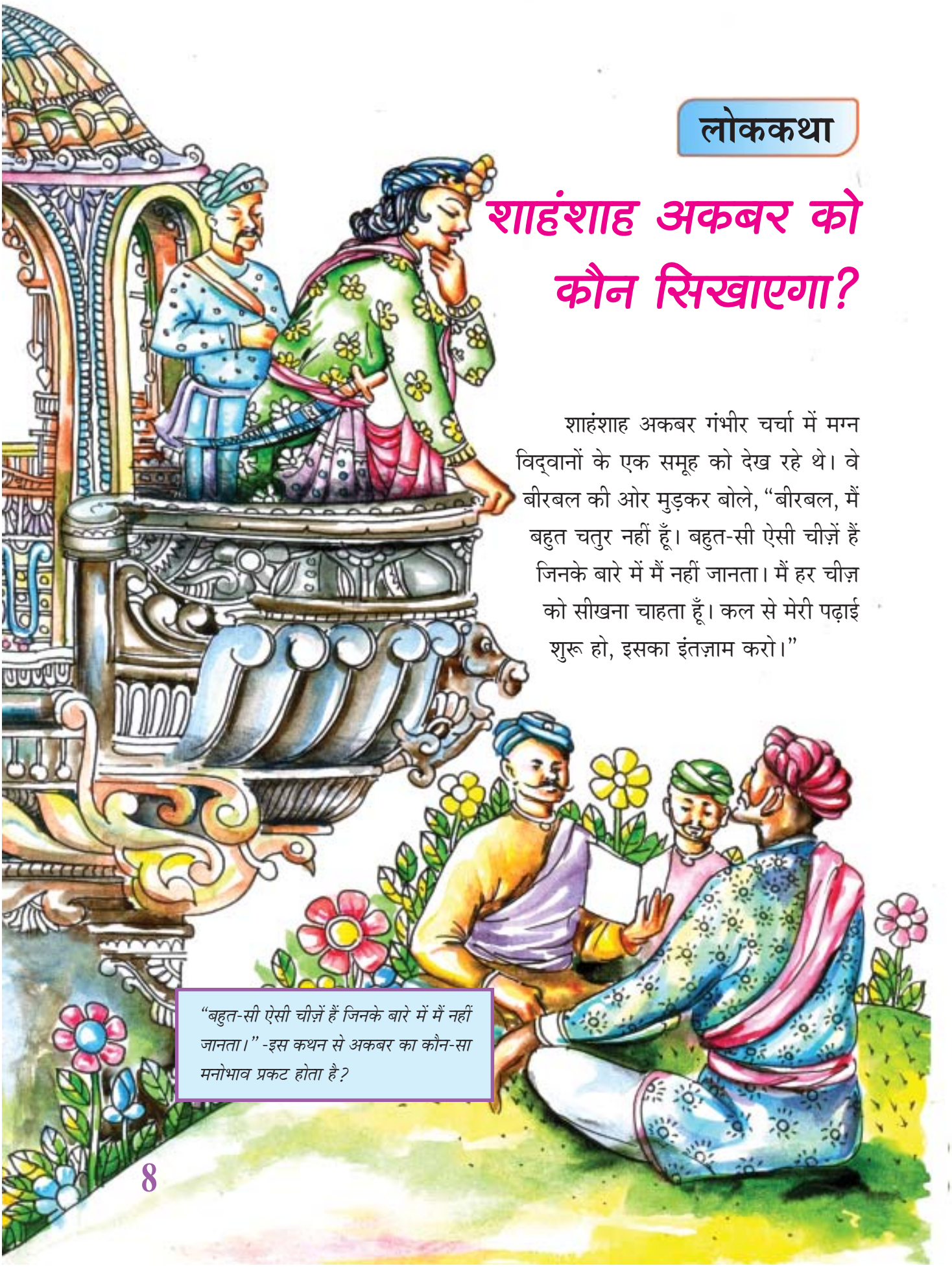

"बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता।" -इस कथन से अकबर का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

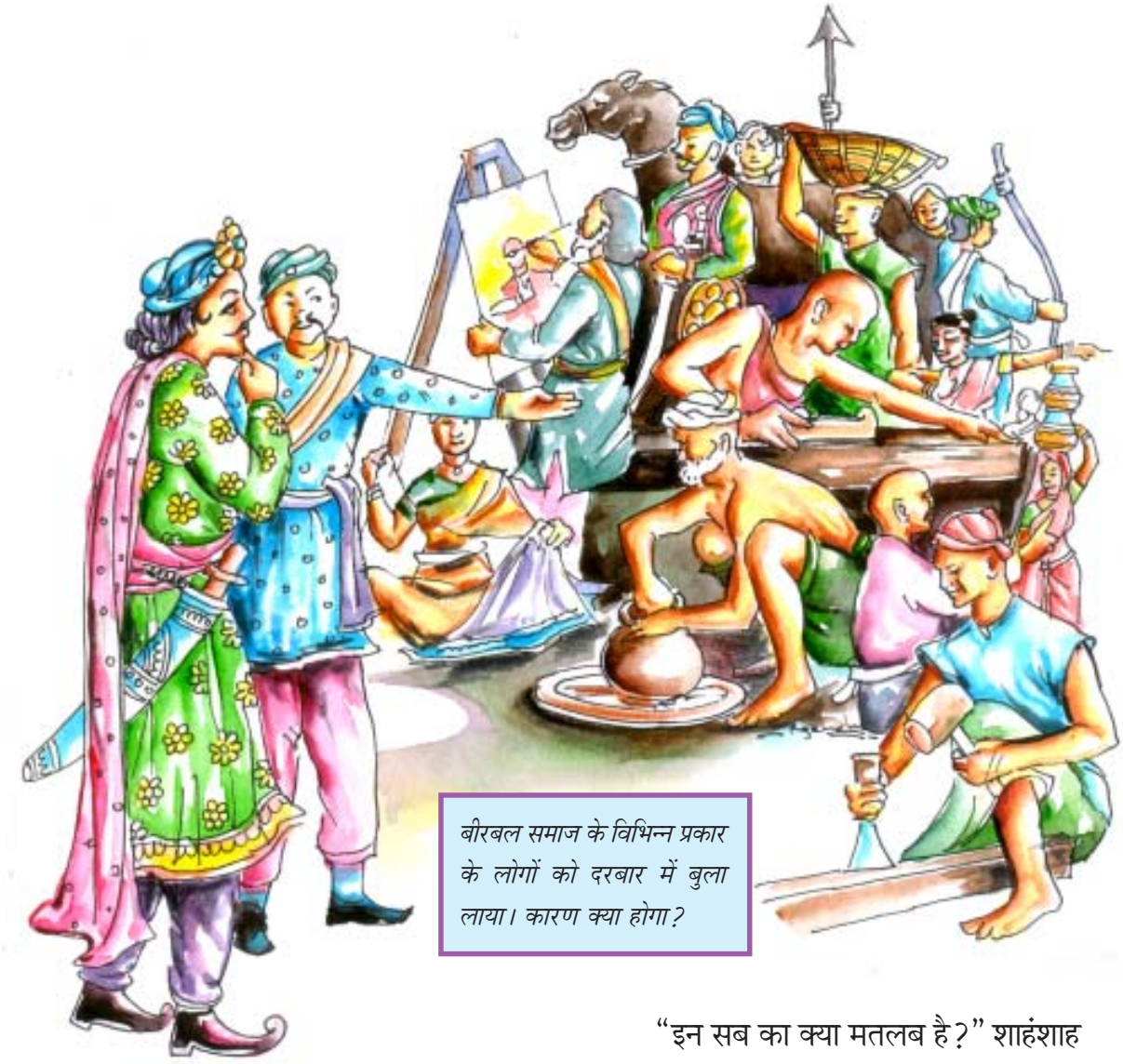

बीरबल समाज के विभिन्न प्रकार के लोगों को दरबार में बुला लाया। कारण क्या होगा?

अगली सुबह जब शाहंशाह ने दरबार में प्रवेश किया तो उनका स्वागत एक विचित्र दृश्य ने किया। दरबार तरह-तरह के लोगों से भरा हुआ था। वहाँ बच्चे और बुजुर्ग थे, गृहिणियाँ और धोबिनें थीं, किसान और कचरा बीननेवाले थे, दुकानदार और लिपिक थे, मूर्ख और ज्ञानी थे। और भी न जाने कितनी तरह के लोग थे।

"इन सब का क्या मतलब है?" शाहंशाह गरजे। "मैंने तुमसे ऐसे लोगों को लाने के लिए कहा था जो मुझे कुछ सिखा सकें और तुमने मेरा महल, राज्य की आधी जनता से भर दिया? अब जवाब दो!"

"माफ़ी चाहता हूँ, जहाँपनाह, मैंने तो बस, आपके आदेशों का पालन किया है।" बीरबल ने जवाब दिया। "गुस्ताखी माफ़ हो, पर क्या जहाँपनाह रेत में घंटों खेलकर अपना मनोरंजन करना जानते हैं?"

"नहीं! पर उससे क्या?" शाहंशाह बौखला गए।

"क्या आप किसी गरीब आदमी की आमदनी में घर चला सकते हैं? या क्या आप जानते हैं कि कपड़ों से दाग कैसे हटाया जाता है?"

"कतई नहीं!" शाहंशाह अकबर ने जवाब दिया।

"क्या जहाँपनाह यह जानते हैं कि बुवाई कब करनी है और फसल को पानी कब देना है? या कचरे में से उपयोगी चीज़ों को कैसे छाँटना है? या कहाँ हरे-भरे चरागाह हैं? या हमारी फसलों के बढ़िया दाम कहाँ मिलेंगे? या किसी शब्द को इतनी खूबसूरती से कैसे लिखें कि वह चित्र जैसा लगे...?"

"नहीं, नहीं, नहीं, हज़ार बार नहीं!" अकबर गुस्से से लाल-पीले होकर चिल्लाए।

"तब जहाँपनाह," बीरबल ने शांति से कहा, "इस दरबार में मौज़ूद हर शख्स आपको कुछ न कुछ सिखा सकता है। हरेक ऐसा कुछ जानता है जो दूसरों को नहीं पता है। प्रत्येक के पास कुछ हुनर है, कुछ ज्ञान है, दिल या दिमाग की कोई ख़ासियत है। तो सभी शिक्षक भी हैं और विद्यार्थी भी!"

शाहंशाह समझ गए कि बीरबल के कहने का क्या मतलब है। वे हँस दिए, "तब तो तुम भी एक विद्यार्थी हो, बीरबल? मैं तो सोचता था कि तुम्हें कोई कुछ नहीं सिखा सकता!"

"बात इससे उलट है जहाँपनाह, मैं तो हमेशा ही सीखता हूँ।" बीरबल ने उत्तर दिया।

"हमेशा ही सीखता हूँ।" -इसका क्या मतलब है?

बीरबल भीड़ की ओर बढ़े। एक बूढ़ी महिला का हाथ थामकर उन्हें शाहंशाह के सामने ले आए। "जहाँपनाह", उन्होंने कहा, "ये मेरे पहले और श्रेष्ठ गुरुओं में से हैं।"

बूढ़ी महिला ने शाहंशाह को सलाम किया और कहा, "हुज़ूर, बुद्धिमान व्यक्ति जानते हैं कि सब कुछ सीख जाना संभव नहीं है। लेकिन सब को यह सीखना चाहिए कि अच्छा इंसान कैसे बन जा सकता है।"

शाहंशाह बूढ़ी महिला के शब्दों की सादगी से प्रभावित हुए। वे उनके आगे अदब से झुके और फिर मुड़कर बीरबल से कहा, "तुम सच में भाग्यशाली हो जो तुम्हें इतनी समझदार गुरु मिलीं।"

यह बूढ़ी महिला किन-किन की प्रतिनिधि हो सकती है?

- **कहानी पढ़ी।**
  इसमें मुख्य पात्र कौन-कौन हैं और उनकी वेश-भूषा कैसी है?
  इस कहानी के कितने प्रसंग हैं? वे कौन-कौन से हैं?
- **अब इन तालिकाओं की पूर्ति करें।**

पात्र	वेश-भूषा

स्थान	समय

- **प्रत्येक प्रसंग में इस कहानी के पात्रों के बीच का संवाद क्या होगा? किसी एक प्रसंग का संवाद तैयार करें।**

- **कहानी को एकांकी के रूप में बदलकर लिखें।**

मेरी रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

रंगमंच

रंग सज्जा का विवरण है।

पात्र

आयु, वेशभूषा, चाल-चलन,
हाव-भाव का संकेत है।

कथोपकथन

संवाद पात्रानुकूल है।

भाषा स्वाभाविक है।

- **इन वाक्यों पर ध्यान दें–**

हर **शख्स** आपको कुछ न कुछ सिखा सक**ता है**।

हरेक ऐसा कुछ जान**ता है**।

क्या **आप** जान**ते हैं**?

मैं हर चीज़ को सीखना चाह**ता हूँ**।

मैं माफ़ी चाह**ता हूँ**।

- **ऊपर के वाक्यों का विश्लेषण करें और रेखांकित अंशों के आपसी संबंध पर चर्चा करें।**

पोल खुल गया...!

पगड़ी में कौन-सा पोल छिपा था?

ज्ञानमार्ग

एकांकी

असगर वज़ाहत

(तीन राजकुमार गुरुकुल में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद घर लौट रहे हैं। तीनों घने जंगल से गुज़र रहे हैं।)

राजकुमार 1: हम तीनों इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि हमने ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

राजकुमार 2: संसार में कितने कम लोगों को यह सौभाग्य प्राप्त होता है।

राजकुमार 3: पर हम सबका ज्ञान बराबर नहीं है।

राजकुमार 1: क्या मतलब है तुम्हारा?

राजकुमार 3: मेरा ज्ञान तुम दोनों के ज्ञान से अधिक है।

राजकुमार 1: कैसी मूर्खतावाली बातें कर रहे हो। मैं तुम दोनों से बड़ा हूँ। मेरे ही पास ज़्यादा ज्ञान है।

राजकुमार 2: मैं तो गुरुकुल आने से पहले भी पढ़ता था। मेरा ज्ञान तुम दोनों से ज़्यादा है।

राजकुमार 1: मेरे पिता बहुत बड़े ज्ञानी हैं। उनका पुत्र होने के नाते मैं तुम दोनों से ज़्यादा विद्वान हूँ।

राजकुमार 2: पिता से क्या होता है? मेरी तो माता जी देश की मानी हुई विदुषी हैं... मैं उनके पेट में नौ महीने रहा हूँ... तुम दोनों मेरा मुकाबला नहीं कर सकते।

राजकुमार 3: मेरे घर के सेवक तक महापंडित हैं... तुम दोनों मेरे आगे मूर्ख हो।

हर राजकुमार अपने को बड़ा ज्ञानी मानता है। असल में बड़ा ज्ञानी कौन है?

राजकुमार 1: यही बात है तो चलो परीक्षा हो जाए।

राजकुमार 3: यही बात है तो तुम अपने ज्ञान का परिचय दो।

राजकुमार 2: ज्ञान का परिचय ज्ञानी को दिया जाता है मूर्खों को नहीं।

राजकुमार 3: तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

राजकुमार 1: अपने ज्ञान का परिचय दो नहीं तो हम तुम को दंड देंगे।

(राजकुमार 2 इधर-उधर देखता है। उसे किसी जानवर की हड्डियाँ पड़ी दिखाई देती हैं।)

राजकुमार 2: ये हड्डियाँ देख रहे हो?

राजकुमार 1: हाँ।

राजकुमार 2: मैं अपने ज्ञान से बता सकता हूँ कि ये हड्डियाँ शेर की हैं।

राजकुमार 3: बस यह तो मामूली बात है। मैं तो अपने ज्ञान से इन हड्डियों पर माँस, उनमें रक्त और उसके ऊपर खाल मढ़ सकता हूँ। लो, मैं मंत्र पढ़ता हूँ।

(राजकुमार 3 मंत्र पढ़ता है और शेर की हड्डियों पर माँस, उनमें रक्त और उसके ऊपर खाल आ जाती है।)

राजकुमार 1: अरे हाँ... यह तो हो गया।

राजकुमार 3: मूर्खो... अब तो तुम समझे... मैं तुम सबसे बड़ा विद्वान हूँ।

राजकुमार 1: लेकिन क्या तुम इसमें प्राण भी डाल सकते हो?

राजकुमार 3: नहीं... पर यह तो तुम भी नहीं कर सकते।

राजकुमार 1: मैं इसमें प्राण भी डाल सकता हूँ।

राजकुमार 2: पर ऐसा मत करना।

राजकुमार 1: क्यों?

राजकुमार 2: उसके बाद शेर हमें खा जाएगा।

राजकुमार 1: पर मुझे तो सिद्ध करना है कि मैं तुम दोनों से बड़ा ज्ञानी हूँ।

राजकुमार 3: नहीं नहीं... शेर हमें खा जाएगा।

(राजकुमार 1 मंत्र पढ़ता है और शेर जीवित हो जाता है। शेर दहाड़कर उनकी तरफ़ बढ़ता है। वे बचने की कोशिश करते हैं।)

राजकुमार 2: अब हम बच नहीं सकते।

राजकुमार 3: शेर हमें खा ही जाएगा।

राजकुमार 2: अरे, वह देखो, कौन आ रहा है?

राजकुमार 3: अरे, वह तो गुरुजी हैं।

(गुरुजी पास आ जाते हैं।)

राजकुमार 2: गुरुजी हम लोग संकट में पड़ गए हैं।

"गुरुजी हम लोग संकट में पड़ गए हैं।" -राजकुमार क्यों संकट में पड़े?

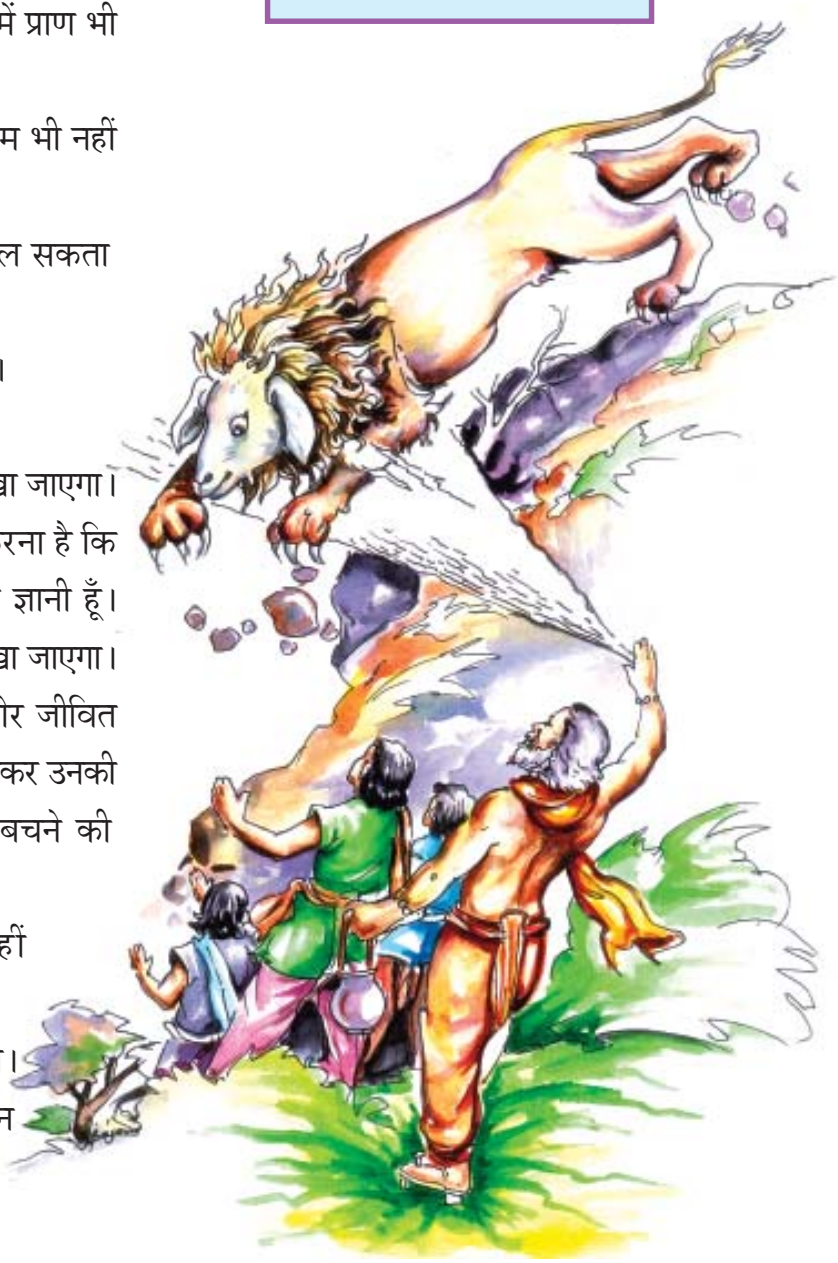

गुरु : मैं जानता हूँ।

राजकुमार 1: गुरुजी हमारी जान बचाइए।

गुरु : मुझे मालूम था कि तुम लोगों के अंदर अभी अहंकार बहुत है और तुम अपने ज्ञान का नुकसान भी कर सकते हो। इसलिए मैं तुम लोगों के पीछे-पीछे आ रहा था।

राजकुमार 1: गुरुजी मुझसे बड़ी गलती हो गई है... शेर हम सबको खा जाएगा।

गुरुजी : अब मैं अपने ज्ञान से इस शेर को बकरी बना दूँगा।

(गुरु मंत्र पढ़ता है। शेर बकरी बन जाता है और मिमियाने लगता है।)

गुरुजी : शिष्यो, ध्यान रहे। वह ज्ञान जिससे अपना या दूसरों का नुकसान हो ज्ञान नहीं बल्कि अज्ञान है। ज्ञान तो सबकी भलाई के लिए ही होता है।

सभी अभिनेता: (एकसाथ कई बार कहते हैं) ज्ञान तो सबकी भलाई के लिए ही होता है।

- **ज्ञानमार्ग एकांकी का मंचन होनेवाला है। इसके लिए एक पोस्टर तैयार करें।**
- **एकांकी का मंचन करें।**

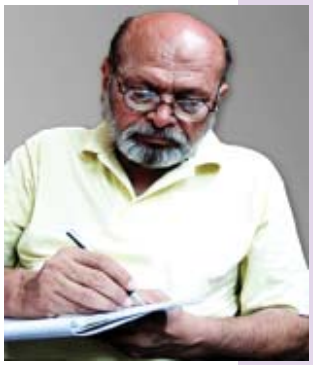

डॉ.असगर वज़ाहत *का जन्म 5 जुलाई 1946 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर में हुआ। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से पी.एच.डी तक की पढ़ाई की। उनके लेखन में तीन कहानी संग्रह, चार उपन्यास, छह नाटक और कई अन्य रचनाएँ शामिल हैं। उनके नाटकों का देश भर में मंचन हुआ है। इसके अलावा पटकथा के क्षेत्र में भी वे मशहूर हैं। 'आधी बानी', 'दिल्ली पहुँचना है', 'कैसी आग लगाई', 'अकी', 'सबसे सस्ता गोश्त' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। संप्रति, वे जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अध्यापक हैं।*

दोस्तों के प्रस्तुतीकरण में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

रंगमंच			
उचित रंग सज्जा है।	☐	☐	☐
सामग्रियों का उचित प्रयोग है।	☐	☐	☐
पात्र			
वेशभूषा पात्रानुकूल है।	☐	☐	☐
चाल-चलन उचित है।	☐	☐	☐
हाव-भाव स्वाभाविक है।	☐	☐	☐
अन्य पात्रों से और प्रसंग से तालमेल है।	☐	☐	☐
कथोपकथन			
संवाद स्पष्ट व श्रव्य है।	☐	☐	☐
संवाद प्रस्तुति स्वाभाविक है।	☐	☐	☐

- **वाक्य पढ़ें, रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।**

  मैं मंत्र **पढ़ता हूँ।**

  क्या, **तुम** इसमें प्राण भी **डाल सकते हो**?

- **चर्चा करें।**

  प्रत्येक वाक्य के रेखांकित शब्दों का आपसी संबंध क्या है?

  पाठ भागों से ऐसे वाक्य चुनें और लिखें।

- **ज्ञान :**
  - *हरेक में कुछ न कुछ ज्ञान है।*
  - *ज्ञान बाहरी दिखावा नहीं है।*
  - *ज्ञान सबकी भलाई के लिए है।*
  - *अहंकार से ज्ञान असफल होता है।*

"जिज्ञासा के बिना ज्ञान नहीं होता।"
महात्मा गाँधी

"उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं जिसे आप काम में नहीं लाते।"
एंटन चेखोव

- **ज्ञान से संबंधित उक्तियों का संकलन करें।**

यह भी पढ़ें...

कविता

मैं इधर हूँ

पी. मधुसूदनन
अनुवाद : इंदुमोहन

खुशबू से और रंगों से
एक फूल बोला– मैं इधर हूँ।
गानों से और लहरियों से
चिड़िया बोली– मैं इधर हूँ।

ओ शिशिर ! हवा को भेज दिया कर
बोला समंदर– मैं इधर हूँ।

चाँद ! तुम चाँदनी उड़ेलते रहो
जुगनू बोले– हम भी हैं।

सागर पहाड़ नदियाँ सब कहते हैं–
हम इधर हैं।

रंगों से, आवाज़ों से, लौ से
गंध, लहर सब
यही कहते हैं– मैं इधर हूँ।

मेरे प्रिय साथी
तुम भी बोलो न, ज़ोर से
मैं इधर हूँ।

- **चर्चा करें :**
  "मैं इधर हूँ" साबित करने में ज्ञान की क्या भूमिका है?
- **कविता पाठ करें।**

पी. मधुसूदनन *का जन्म एरणाकुलम के वलयनचिरङरा में हुआ। आप 'अबूदाबी शक्ति अवार्ड' और 'केरल बाल साहित्य इंस्टिट्यूट अवार्ड' से सम्मानित हैं। आप श्रीमूलनगरम अकवूर माध्यमिक स्कूल में प्रधानाध्यापक हैं।*

अधिगम उपलब्धियाँ

- कहानी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कहानी को एकांकी के रूप में बदलता है।
- कार्टून पढ़कर विचार प्रस्तुत करता है।
- पोस्टर तैयार करता है।
- एकांकी का मंचन करता है।
- कविता का आशय लिखता है।
- कविता पाठ करता है।
- कर्ता-क्रिया अन्विति का विश्लेषण करता है और प्रयोग करता है।

मदद लें...

अदब	ആദരവ് மரியாதை ಗೌರವ respect
आमदनी	വരുമാനം வருமானம் ಆದಾಯ income
इंतज़ाम	ഏർപ്പാട് முன்னேற்பாடு ವ್ಯವಸ್ಥೆ arrangement
चाँदनी उड़ेलना	നിലാവ് തൂവുക, நிலவொளி வீசுதல் ಬೆಳದಿಂಗಳು ಹರಡು
उलट	എതിര് எதிரான ವಿರುದ್ಧ opposite
कचरा बीननेवाला	ചപ്പ് ചവറുകൾ പെറുക്കുന്നവർ துப்புரவாளர்கள் ತರಗೆಲೆ ಹೆಕ್ಕುವವರು rag sorters
खाल	ചർമ്മം தோல் ಚರ್ಮ skin
खासियत	സവിശേഷത சிறப்பு ವಿಶೇಷತೆ speciality
गुज़रना	കടന്നു പോവുക கடந்து செல்லுதல் ದಾಟು to pass
गुस्ताखी	ധിക്കാരം கர்வம் ಧಿಕ್ಕರಿಸು impudence
गृहिणियाँ	വീട്ടമ്മമാർ குடும்பத்தலைவி ಗೃಹಣಿ the mistresses of house
चतुर	ബുദ്ധിമാൻ ஞானி ಬುದ್ಧಿವಂತ wise
चरागाह	മേച്ചിൽ സ്ഥലം மேய்ச்சல் நிலம் ಮೇವಿನ ಸ್ಥಳ grazing land
ज़्यादा	കൂടുതൽ அதிகம் ಅಧಿಕ more
दंड	ശിക്ഷ தண்டனை ಶಿಕ್ಷೆ punishment
दहाड़कर	ഗർജ്ജിച്ച് കൊണ്ട് கர்ஜித்துக்கொண்டு ಘರ್ಜಿಸಿ
दाग	കറ கறை ಕಲೆ stain
धोबिनें	അലക്കുകാരികൾ பெண் சலவைத்தொழிலாளிகள் ದೋಬಿ
नुकसान	നഷ്ടം நஷ்டம் ನಷ್ಟ loss
फ़सल	വിളവ് அருவடை ಕೊಯ್ಲು harvest

बुज़ुर्ग	പ്രായമുള്ളവർ வயதானவர் ವಯಸ್ಸಾದ aged
बुवाई	വിത വിതൈ ಬಿತ್ತು sowing
बौख़ला गए	കോപാന്ധനായി கோபத்தால் பைத்தியமாகுதல் ಕೋಪಾವಿಷ್ಟನಾಗಿ to loose one's temper
मढ़ना	പൊതിയുക பொதிந்து ಹೊದಿಯು to frame
मामूली	സാധാരണമായ பொதுவான ಸಾಮಾನ್ಯ ordinary
मुकाबला करना	മത്സരിക്കുക போட்டியிடுதல் ಸ್ಪರ್ಧಿಸು to compete
मूर्ख	വിഡ്ഢി முட்டாள் ಮೂರ್ಖ fool
मौज़ूद	സന്നിഹിതരായ ஆஜரான ಇರುವ present
रेत	മണൽ மணல் ಹೊಯ್ಗೆ sand
लहरियाँ	തരംഗങ്ങൾ சிற்றலைகள் ತರಂಗ ripples
लाल पीला होकर	अत्यधिक क्रुद्ध होकर
लिपिक	ഗുമസ്തൻ குமஸ்தா ಗುಮಾಸ್ತ clerk
लौ	ज्वाला
विदुषी	विद्वान स्त्री
समझदार	വിവേകമുള്ള அறிவார்ந்த ವಿವೇಚನೆಯುಳ್ಳ wise
सादगी	सरलता
शख्स	व्यक्ति
हुनर	क्षमता